अध्याय – चतुर्थ

प्रदत्त विश्लेषण,परिणाम एंव व्याख्या

4.1 भूमिका

4.2 परिकल्पनाओं का परीक्षण

4.3 परिणामों की विवेचना

अध्याय चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एंव व्याख्या

4.1 भूमिका

प्रदत्तों का विश्लेषण एंव व्याख्या शोध प्रक्रिया के आगमन तथा निगमन तर्क के प्रयोग को व्यक्त करता है। स्वनिर्मित परिकल्पनाओं की स्वीकृति हेतु प्रदत्तों को समूह व उप समूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है। जो नवीन सिद्धांत की खोज अथवा सामान्यीकरण के रूप से होता है। प्रदत्तों के विश्लेषण के अंतर्गत उनकी उपलब्धियों की तुलना उनके परीक्षण द्वारा कर शोध के उद्देश्यों को निर्णय प्राप्त निष्पत्तियों द्वारा किया जाता है।

4.2 परिकल्पनाओं का परीक्षण–

प्रस्तुत अध्ययन में उचित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।इस शोध अध्ययन में परिकल्पनाओं की जांच करने के उपरांत त्वरित प्रदत्तों के निरंतर प्रस्तुतीकरण के लिये शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणामों की व्याख्या की गई जो अग्रांकित सारणियों में प्रस्तुत है।

4.2.1 परिकल्पना कं.1

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रथम परिकल्पना यह है, कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एंव व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक संबंध नहीं होगा। जिसका आश्रय यह हुआ कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति में वृद्धि का उनकी व्यावसायिक संतुष्टि पर कोई असर नहीं होता है।

इसका परीक्षण करने हेतु तालिका कं. 4.2.1 से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका कं 4.2.1

चर variable	समूह संख्या N	मुक्तांश (df)	सहसंबध गुणांक r	
अध्यापन अभिवृत्ति	100	98	$.88^{**}$	Not significant
व्यावसायिक संतुष्टि	100	98		

** Significant at 0.01 level

तालिका कं. 4.2.1 में प्रयुक्त आंकड़ो से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एंव व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सहसंबध गुणांक का मान $.88^{**}$ है, जो कि .01 स्तर पर सार्थक है। इसीलिए यह परिकल्पना (Ho^1)निरस्त की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एंव व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य उच्च धनात्मक सहसंबंध है।

4.2 परिकल्पना कंमाक –2

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की द्वितीय परिकल्पना (Ho^2) यह है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति में अन्त:सहसंबंध नहीं होगा। इसका तात्पर्य यह हुआ कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति में अन्त:सहसंबध (Intra Correlation) नहीं होगा। इसका परीक्षण करने हेतु तालिका कंमाक 4.2.2 से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

तालिका कमांक 4.2.2

	Apt 1	Apt 2	Apt 3	Apt 4	Apt 5	Apt 6
Apt 1 Person Correlation Sig. (2-tailed) N	100					
Apt 2 Person Correlation Sig. (2-tailed) N	.094 .354 100	100				
Apt 3 Person Correlation Sig. (2-tailed) N	-.096 .340 100	-.068 .504 100	100			
Apt 4 Person Correlation Sig. (2-tailed) N	.036 .720 100	.300** .002 100	-.003 .975 100	100		
Apt 5 Person Correlation Sig. (2-tailed) N	.222* .027 100	-.061 .546 100	.009 .930 100	.008 .941 100	100	
Apt 6 Person Correlation Sig. (2-tailed) N	.195 .052 100	.094 .350 100	-.018 .859 100	.088 .384 100	-.083 .410 100	100

तालिका क्रंमाक 4.2.2 में प्रस्तुत आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों को शिक्षण अभिवृत्ति में अन्तःसहसंबंध गुणांक का मान 1.00 है। जो कि 0. 05 स्तर पर सार्थक नहीं। इसका तात्पर्य यह है कि अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति के अन्तःसहसंबंध में सार्थक संबंध है।

4.2.3 परिकल्पना क्रमांक (Ho^3)

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की तृतीय परिकल्पना (Ho^3) यह है, कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि में Intro correlation नहीं है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि में अनुकूल व प्रतिकूल कथनों में सार्थक अंतर नहीं है। इसका परीक्षण करने हेतु तालिका क्रं. 4.2.3 से तात्पर्य परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

	व्यावसायिक संतुष्टि	व्यावसायिक संतुष्टि
Js_1	1.00	.051
Js_2	.051	1.00

उपरोक्त सारणी के अनुसार व्यावसायिक संतुष्टि एंव व्यावसायिक असंतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है, अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है इससे यह ज्ञात होता है कि शिक्षक व्यावसायिक संतुष्टि पर प्रभाव पड़ता है।

4.2.4 परिकल्पना क्रमांक–4 (Ho^4)

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की चतुर्थ परिकल्पना(Ho^4)यह है,कि प्राथमिक विद्यालयों के महिला एंव पुरूष अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा। इसका तात्पर्य यह हुआ कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं होता है। इसका परीक्षण करने हेतु तालिका क्रं.4.2.2 से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका कमांक 4.2.4

प्राथमिक विद्यालयों के महिला एंव पुरूष अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्तियों की तुलना–

क्रमांक	लिंग	समूह संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मुक्तांश	t	
1	महिला	50	97.04	11.76	98	4.27	significant
2	पुरूष	50	87.84	9.67			

तालिका कंमाक 4.2.4 में प्रयुक्त आंकड़ों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के महिला एंव पुरूष अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति का 'टी' परीक्षण 4.27 है। जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसीलिए यह परिकल्पना (Ho^4) अस्वीकृत की जाती है इसका तात्पर्य यह है कि लिंग का अध्यापकों की अध्यापक अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है। उपरोक्त विश्लेषण निकलता है, कि महिला शिक्षकों की शिक्षक अभिवृत्ति पुरूष शिक्षकों की तुलना में अधिक है।

4.2.5 परिकल्पना 5 (Ho^5)

प्रस्तुत अनुसंधान की पांचवी परिकल्पना (Ho^5) यह है कि प्राथमिक विद्यालयों के महिला एंव पुरूष अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होगा इसका तात्पर्य यह है कि लिंग का अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर कोई असर नहीं होता है।

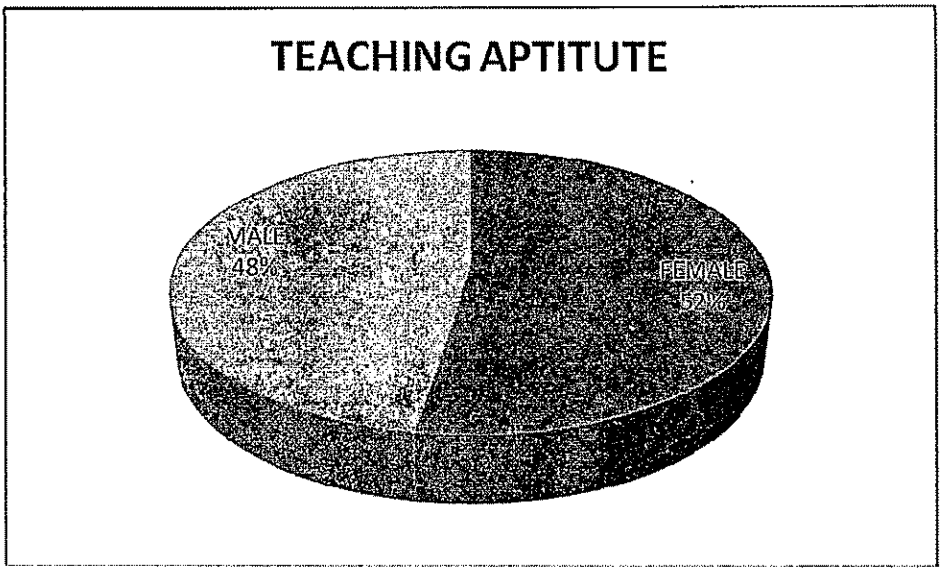

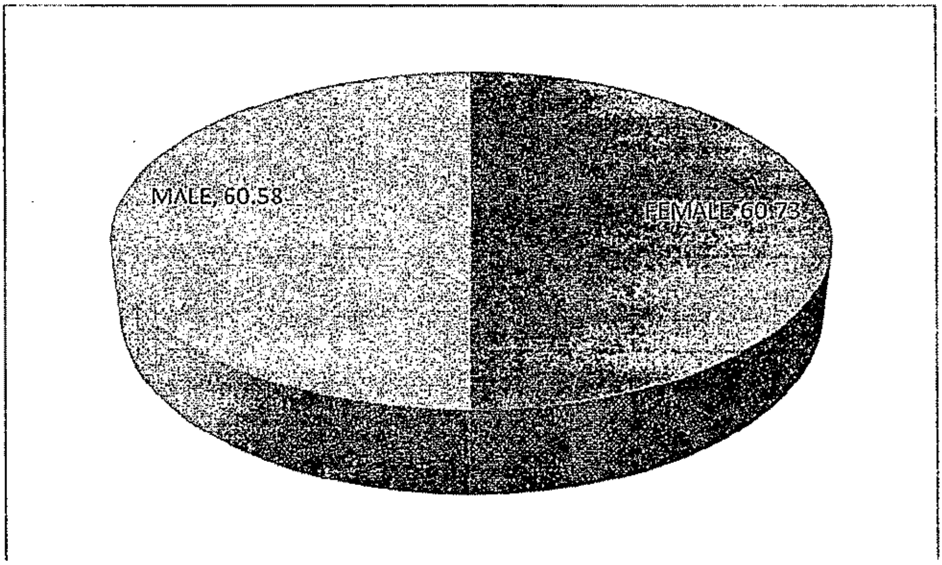

JOB SATISFACTION

तालिका कमांक 4.2.5

प्राथमिक विद्यालयों के महिला एंव पुरूष अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना–

कंमाक	लिंग	समूह संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मुक्तांश
1	महिला	50	60.73	18.20	98
2	पुरूष	50	60.58	18.20	

Not significant at 0.01 level

तालिका कमांक 4.2.5 में प्रस्तुत आंकड़ों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के महिला एंव पुरूष अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि का 't' परीक्षण का मान 0.041 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए यह परिकल्पना (Ho^5) स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि लिंग का अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर कोई अन्तर नहीं होता है।

4,3 परिणामों की विवेचना–

प्रथम परिकल्पना के परीक्षण के बाद प्राप्त परिणामों तालिका कमांक 4.2.1 के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अध्यापन अभिवृत्ति का व्यावसायिक संतुष्टि पर असर होता है। प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अभिवृत्ति जब सकारात्मक होती है तो वे अपने व्यवसाय से संतुष्ट रहते हैं। सकारात्मक अभिवृत्ति के कारण वे अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध रहते है। अपने व्यवसाय के प्रति एकनिष्ठता की भावना उनमें देखने को मिलती है जिससे अध्यापन प्रकिया भी प्रभावित होती है। अपने कार्य से संतुष्ट रहने के कारण अध्यापकों की व्यावसायिक क्षमता में भी वृद्धि होती है और जब अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति नकारात्मक होती है तो वे निश्चित ही अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं रह सकते।

द्वितीय परिकल्पना के परीक्षण के बाद प्राप्त परिणामों तालिका कमांक 4.2.2 का विश्लेषण करने के बाद पाया गया कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण

अभिवृत्ति में अन्तःसहसंबध है शिक्षक अभिवृत्ति के छह बिन्दु आपस में एक दूसरे से जुडे हुए हैं।ये सारे घटक अध्यापन व्यवसाय,कक्षा अध्यापन,छात्र केन्द्रित व्यवहार,शैक्षिक,प्रकिया,छात्र,अध्यापक ये सारे घटक शिक्षण प्रकिया से संबधित है।

तृतीय परिकल्पना के परीक्षण के बाद प्राप्त परिणाम तालिका कमांक 4.2.3 का विश्लेषण करने के बाद पाया कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों में व्यावसायिक संतुष्टि में अनुकूल और प्रतिकूल कथन का प्रभाव पड़ता है।

चतुर्थ परिकल्पना के परीक्षण से प्राप्त परिणामों तालिका कमांक4.2.4 के आधार पर हम कह सकते हैं,कि वर्तमान आधुनिक युग में समाज में स्त्री एंव पुरूष के सोचने का ढंग कार्य करने का तरीका आदि में समानता मिलती है,पर विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकला की प्राथमिक स्तर पर महिलायें पुरूषों का शिक्षण अधिक प्रभावशाली है इसीलिये विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि प्राथमिक स्तर पर महिला शिक्षक अभिवृत्ति अधिक प्रभावशाली है।

पांचवी परिकल्पना के परीक्षण से प्राप्त परिणामों तालिका कमांक 4.2.5 के आधार पर हम कह सकते हैं कि महिला हो या पुरूष हो यदि उसे अपेक्षित उचित माहोल में काम करने का अवसर मिलता है तो वे प्रभावी ढंग से कार्य भी करेंगे। और अपने कार्य का उन्हें परितोष भी होता है। लेकिन यदि उचित वेतन व उनकी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति व्यवसाय से नहीं हो पाती है तो व्यवसाय से संतुष्ट नहीं रह सकते। इसीलिए हम कह सकते हैं कि लिंग का व्यवसायिक संतुष्टि पर कोई असर नहीं होता है।